ICSSR Sponsored
ISSN: 2319-9997
Journal of Nehru Gram Bharati University, 2025; Vol. 14 (II):297-300

मानवीय और सामाजिक चेतना : एक चिन्तन

ज्योति अवस्थी एवं ममता मिश्रा

हिन्दी विभाग
नेहरु ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज

Received: 31.07.2025 Revised: 21.10.2025 Accepted: 31.10.2025

सारांश

समकालीन हिन्दी कविता पर हुए विचार-विमर्श, गोष्ठियों कथा और शिल्प आदि पर चर्चा के पश्चात यह निश्चित किया गया कि साठोत्तरी कविता ही समकालीन कविता है। समकालीन कविता के अन्तर्गत अनेक काव्यान्दोलन उभरकर सामने आये और अपना-अपना औचित्य सिद्ध करने के लिए प्रयासरत रहे हैं। समकालीन कविता आज भी अपने अस्तित्व को बचाये हुए हैं। समकालीन हिन्दी कविता की एक प्रमुख विशेषता है कि लोक जीवन से उसका जुड़ाव, इसी को आलोचकों ने लोक संसृक्ति कहा है। प्रयोगवाद लोकजीवन से कट सा गया था किन्तु समकालीन नई कविता ने लोक जीवन को अनुभूति, सौन्दर्यबोध दोनों स्तरों पर ग्रहण किया है। उसमें लोक जीवन के बिम्ब, उपमान, प्रतीक एवं भाषा प्रयुक्त है। समकालीन हिन्दी कविता का क्षेत्र हमारे आस-पास का परिवेश है।

मुख्य शब्द *- मानव-चिन्तन, सामाजिक चेतना, राजनीति, कविता, परिवार।*

मानवीय 'अस्तित्व' और उसकी 'अस्मिता' मानव-चिन्तन की महत्वपूर्ण अवधारणाएँ हैं। वर्तमान युग में मनुष्य और मानवता की पहचान का संकट सर्वाधिक त्रासदी के रूप में हमारे सामने उपस्थित है जहाँ तक मानवता का सवाल है वह तो हमारे समय में एक अमूर्त धारणा का रूप ले चुकी है। न तो उसकी ओर कोई ध्यान देता है न ही आम लोगों में उसके प्रति चिन्ता है। समकालीन कविता अपने अस्तित्व को कायम रखते हुए समाज और परिवार के बीच समरसता चाहती है, तादात्म नहीं। समकालीन कवि अपने अस्तित्व और अस्मिता के प्रति पूर्ण सतर्क है लेकिन अस्तित्ववादियों की तरह अपने हर क्षण को क्षणवादी मानकर चिन्ताकुल नहीं है। क्षण के प्रति मोह होना और अपने अस्तित्व की पहचान के प्रति सजग रहना दोनों में अन्तर है। कवि इस पहचान के प्रति सचेष्ट है। यह पहचान चाहे राजा भोज की हो या फिर गंगू तेली की।[i] आज रचनाकार के सामने एक मुखैटा है, पहचान की पड़ताल है कुमार विकल की निम्न कविता से पहचान का रूप कितना सटीक उजागर होता है-

''यह शेर का मुखौटा है और भालू ने पहन रखा है

यह भालू का मुखौटा है और बन्दर ने पहन रखा है

यह आदमी का मुखौटा है किसने पहन रखा है?

फिर आदमी के चेहरे पर किसका मुखौटा है।[ii]

उपुर्यक्त पंक्तियाँ पुरानी पीढ़ी को फढ़ने में सफल है। समकालीन कविता में स्वस्थ मानवीय चेतना दिखायी देती है। आज के नवोदित रचनाकारों द्वारा माता-पिता भाई बहन, पुत्र-पुत्री, लड़का-लड़की, नाना-नानी, दादा-दादी आदि पारिवारिक सम्बन्धों तथा घर, गाँव, शहर आदि परिवेशगत वातावरण को लेकर विभिन्न प्रकार की चिन्तन और चेतना प्रधान कविताएँ लिखी जा रही है।

''मनुष्य के चिन्तन में नए-नए विचारों का समावेश हुआ है और संसार की परिवर्तित होती हुई मान्यताओं से परिवार की नींव, व्यक्ति का चिन्तन और दृष्टिकोण युगबोध से प्रेरित हो चुका है।''[iii]

संयुक्त परिवार में दर्द, घुटन, गुहार, अनास्था आदि की जो पुकार बलवती थी यहाँ एकल परिवार में आकर वह समाप्त हो गई है। इसके बावजूद भी भारत में अनेक ऐसे परिवार हैं जहाँ थकान, कुंठा और निराशा की आपाधापी तथा पीढ़ियों के वैचारिक संघर्ष ने जीवन का रस सोख लिया है। आत्मिक स्नेह तिरोहित हो गया है मात्र मौखिक रह गया है -

''माँ/बहिन/बीबी

ये सब रिश्ते पवित्र हैं

क्योंकि मुँह जबानी है।''[iv]

चन्द्रकान्त देवताले, रंजना श्रीवास्तव, नीलेश रघुवंशी, शलभश्रीराम सिंह आदि कवियों ने पत्नी, बच्चे, घर और आस-पास के वातावरण को लेकर कविताएँ लिखी है। इन कवियों ने वर्तमान खोखली राजनीति, साम्प्रदायिकता, आडम्बर आदि पर भी विरोध जताया है। समाज में होने वाले परिवर्तनों के अनुकूल स्त्री अपने को बदलने में असमर्थ है। न तो वह स्वतंत्र हो सकती है न संयुक्त परिवार में रहकर जी सकती है उसी की इस विवशता को कवि ने बड़े ही बेबाक शब्दों में अभिव्यक्त किया है। धर्मवीर भारती की कविता का यह कवितांश-

''मैं चली जा रही हूँ ऐसे

जैसे लहरों पर

विवश लाश बहती जाय।''[v]

समकालीन हिन्दी कविता में दायित्व-बोध का यह एहसास अनिवार्य है। समकालीन हिन्दी कवि वर्तमान विषम और जटिल परिस्थितियों में व्यवस्था के षडयंत्र और उसके बीच फंसे हुए सामान्य मनुष्य का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। वह मध्यमवर्ग तथा निम्न-मध्य-वर्ग के अंर्तविरोधों, उनकी कमजोरियों को बेनकाब करता है।

आज का युग व्यक्ति और समाज के संघर्ष का युग है। आदर्शों के आपसी संघर्ष ने नए-पुराने परम्परा और आधुनिकता के मध्य तनाव उत्पन्न कर दिया है। समकालीन हिन्दी कविता में परिवारिक मजबूरियों का चित्रण नागार्जुन तथा गजाननमाधव मुक्तिबोध, की निम्न कविता दृष्टव्य है-

''आँखों में तैरता चित्र एक
उर में सम्हाले दर्द
गर्भवती नारी का
कि जो पानी भरती है वजनदार घड़ों से
कपड़े धोती है भाड़-भाड़
घर के काम बाहर के काम सब करती है
अपनी सारी थकान के बावजूद
घर की गिरस्ती के लिए ही।''[vi]

व्यक्ति की सामाजिक चेतना उपेक्षित, शोषित और लघुमानव का सर्मथन करती है क्योंकि वह इस अन्यत्र वर्ग के दुःख दर्द को अच्छी तरह से जानती है। इसके लिए वह व्यक्तिवाद का विरोध करती है क्योंकि उसे पूरी तरह विश्वास हो गया है क्योंकि वही व्यक्तिवादी है जो लघुमानव के परिश्रमजन्य रक्त को चूस-चूस कर अपनी कोठरियाँ भरता है। समकालीन कविता में विषमता के इस कैंसर को समाप्त करना चाहती है। राजेश जोशी ने अपनी कविताओं द्वारा समाज के प्रत्येक विषय को अभिव्यक्ति दी है। प्रत्येक कविता किसी न किसी गंभीर अर्थ को धारण किये हुए है। समकालीन कवि किसी शक्ति, सत्ता, राजनीतिक आकांक्षाओं प्रपंचों प्रलोभनों के आगे झुकने वाला नहीं है। वह स्वाभिमान एवं आत्मबल से ओत-प्रोत है। वह किसी के दबाव में नहीं है 'मैं झुकता हूँ' कविता में कवि राजेश जोशी अपनी इसी प्रवृत्ति को व्यक्त करते हुए लिखते हैं -

''झुकता हूँ लेकिन उस तरह नही
जैसे एक चापलूस की आत्मा झुकती है
किसी शक्तिशाली के सामने

जैसे लज्जित या आँखे अपमानित होकर झुकती है।

जैसे शब्दों को पढ़ने के लिए आँखे झुकती है।[vii]

समकालीन कविता में जीवन से सीधा साक्षात्कार देखने को मिलता है। आज का कवि जब मनुष्य को दुहरी जिन्दगी जीते हुए देखता है तो साक्षात्कार परिवेश के प्रति अपनी प्रतिबद्धता सूचित करता है यह प्रतिबद्धता और कुछ नहीं कवि की सचेत दृष्टि द्वारा परिवेश का सही ग्रहण ही है और यही समकालीन सन्दर्भों और स्थितियों से सीधा साक्षात्कार है। केदारनाथ सिंह, मलयज धूमिल, प्रयागशुक्ल आदि की कविताओं में देखा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

i धीरेन्द्र वर्मा] हिन्दी साहित्य कोष भाग-2] पृ० 758

ii चाहे मैं दो टके का आदमी होऊ फिर भी मुझे मेरे नाम से जाना जाय की प्रधान-संपादक विजयराय] उ०प्र०] अजय प्रकाश कविता] दिसम्बर 2002] पृ० 20

iii स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी काव्य और सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति, चन्द्रभूषण सिंह] पृ० 53

iv लीलाधर जगुड़ी] नाटक जारी है] पृ० 54

v धर्मवीर भारती] सातगीत वर्ष] स्त्री आलोचना] त्रैमासिक] पृ० 37

vi गजानन माधव मुक्तिबोध, प्रतिनिधि कविताएँ] संपादक- अशोक वाजपेयी अंधेरे में] पृ० 21

vii राजेश जोशी] चांद की वर्तनी] राजकमल प्रकाशन] नई दिल्ली

Disclaimer/Publisher's Note:

The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.